

## Padma Shri



### **SHRI GODAWARI SINGH**

Shri Godawari Singh is a famous wooden handicraft artist.

2. Born on 1 January, 1941, Shri Godawari departed from his birthplace, Gorakhpur, along with his mother and brother in 1953, and relocated to Varanasi, where he embarked on his artistic journey. He started his artwork journey making sindhora, an art form that is popular in weddings even now. He revolutionized this art using modern tools to craft newer and creative products. He has devoted his entire life to preserve this wooden handicraft industry and supporting its artisans. Currently, more than 2000 artisans are employed in this field under his guidance.

3. Shri Singh established 20 self-help groups in 2001 under the Dr. Bhimrao Ambedkar scheme, administered by the Toy Industry Co-operative Society Limited. These groups comprised a total of 300 craftsmen who were provided with training, design workshops, and toolkits under the scheme.

4. Shri Singh received a State Award for his creation of the wooden Arjun Rath in 2003-04. In January 26, 2005, during the Republic Day celebrations, he represented Uttar Pradesh alongside his artisans, the then showcasing their artwork in a grand procession and achieving the third position. The then President Shri APJ Kalam and the then Prime Minister Shri Manmohan Singh honoured both him and the artisans. On August 7, 2006, he was appointed as a patron by the Board of Directors of Industries to provide benefits to toy artisans under the Prime Minister's scheme. In 2007, the Ministry of Textiles, Lucknow, bestowed upon him the title of Bhishma Pitamah.

5. In 2016, Shri Singh was honoured by the Ministry of Textiles, during the inauguration ceremony of Guru Shishya Parampara. On January 13, 2016, he received the Excellence Award from Shri Kalraj Mishra, the Governor of Rajasthan. In February 2017, he was bestowed with the Kalamani Award by the then Haryana Governor Shri Kaptan Singh Solanki at the Surajkund International Fair. In 1970, the Prime Minister of Canada was deeply impressed by his artwork and bestowed upon him the Gold Medal.

## पद्म श्री



### श्री गोदावरी सिंह

श्री गोदावरी सिंह एक प्रसिद्ध काष्ठ हस्तशिल्प कलाकार हैं।

2. 1 जनवरी, 1941 को जन्मे श्री गोदावरी वर्ष 1953 में अपनी मां और भाई के साथ अपने जन्मस्थान, गोरखपुर से निकलकर वाराणसी चले गए, जहां कला की उनकी यात्रा शुरू हुई। उन्होंने कला की अपनी यात्रा सिंधोरा बनाने से शुरू की, जो कला रूप अब भी शादियों में लोकप्रिय है। उन्होंने नई और रचनात्मक वस्तुएं तैयार करने के लिए आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल करके इस कला के क्षेत्र में क्रांति ला दी। उन्होंने अपना पूरा जीवन इस काष्ठ हस्तशिल्प उद्योग को संरक्षित करने और इसके कारीगरों की मदद करने के लिए समर्पित कर दिया है। वर्तमान में उनके मार्गदर्शन में 2000 से अधिक कारीगर इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं।
3. श्री सिंह ने वर्ष 2001 में खिलौना उद्योग सहकारी समिति लिमिटेड के अंतर्गत आने वाली डॉ. भीमराव अम्बेडकर योजना के तहत 20 स्वयं सहायता समूहों की स्थापना की। इन समूहों में कुल 300 शिल्पकार शामिल थे जिन्हें योजना के तहत प्रशिक्षण, डिजाइन कार्यशालाएं और टूलकिट दिए गए।
4. श्री सिंह को वर्ष 2003-04 में लकड़ी के अर्जुन रथ के निर्माण के लिए स्टेट अवार्ड मिला। 26 जनवरी, 2005 को, गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान, उन्होंने भव्य जुलूस में अपने कारीगरों के साथ उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी कलाकृति का प्रदर्शन किया और तीसरा स्थान प्राप्त किया। तत्कालीन राष्ट्रपति श्री एपीजे अब्दुल कलाम और तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने उन्हें और कारीगरों को सम्मानित किया। 7 अगस्त, 2006 को उन्हें प्रधानमंत्री योजना के तहत खिलौना कारीगरों को लाभ प्रदान करने के लिए उद्योग निदेशक मंडल द्वारा संरक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। वर्ष 2007 में वस्त्र मंत्रालय, लखनऊ ने उन्हें भीष्म पितामह की उपाधि से सम्मानित किया।
5. वर्ष 2016 में, गुरु शिष्य परंपरा के उद्घाटन समारोह के दौरान, वस्त्र मंत्रालय ने श्री सिंह को सम्मानित किया। 13 जनवरी, 2016 को उन्हें राजस्थान के राज्यपाल, श्री कलराज मिश्र से उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ। फरवरी, 2017 में, सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय मेले में हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल, श्री कप्तान सिंह सोलंकी ने उन्हें कलामणि पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्ष 1970 में कनाडा के प्रधान मंत्री उनकी कलाकृति से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया।